अक्रम यूथ

फरवरी २०१७ | हिन्दी दादा भगवान परिवार ₹ १२

क्लेश

अनुक्रमणिका

०४ इनमें से क्लेश किसे कहते हैं?

०६ ज्ञानी विद यूथ

०८ महान पुरुषों की झाँकियाँ

११ चीज़ों से ज्यादा व्यक्ति की कीमत

१२ Change Belief Get Relief

१४ भ्रष्टाचार रोको

१६ अभी तो मज़ा कर लें, कल की कल देखेंगे

१९ ज्ञानी की वैज्ञानिक दृष्टि से...

२० समाधान हमारी परेशानियों के

संपादक : डिम्पल मेहता
वर्ष : ४, अंक : १०
अखंड क्रमांक : ४६
फरवरी २०१७

संपर्क सूत्र:
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला: गांधीनगर-३८२४२१, गुजरात
फोन: (०७९) ३९८३०१००
email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr. RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

कुल २४ पेज कवर पेज सहित

सदस्यता शुल्क
वार्षिक
भारत : १२५ रुपए
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड

पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के. : ४० पाउन्ड
D.D/M.O. महाविदेह फाउन्डेशन के नाम पर भेजें।

ओनलाइन सबस्क्राइब करने के लिए...
store.dadabhagwan.org/akram-youth

You need to download
QR Code Scanner App
from Play store
or iTunes Store

Download free ebook / PDF versions of all Akram Youth issues by scanning this QR code

Visit http://youth.dadabhagwan.org/Gallery/Akram-Youth

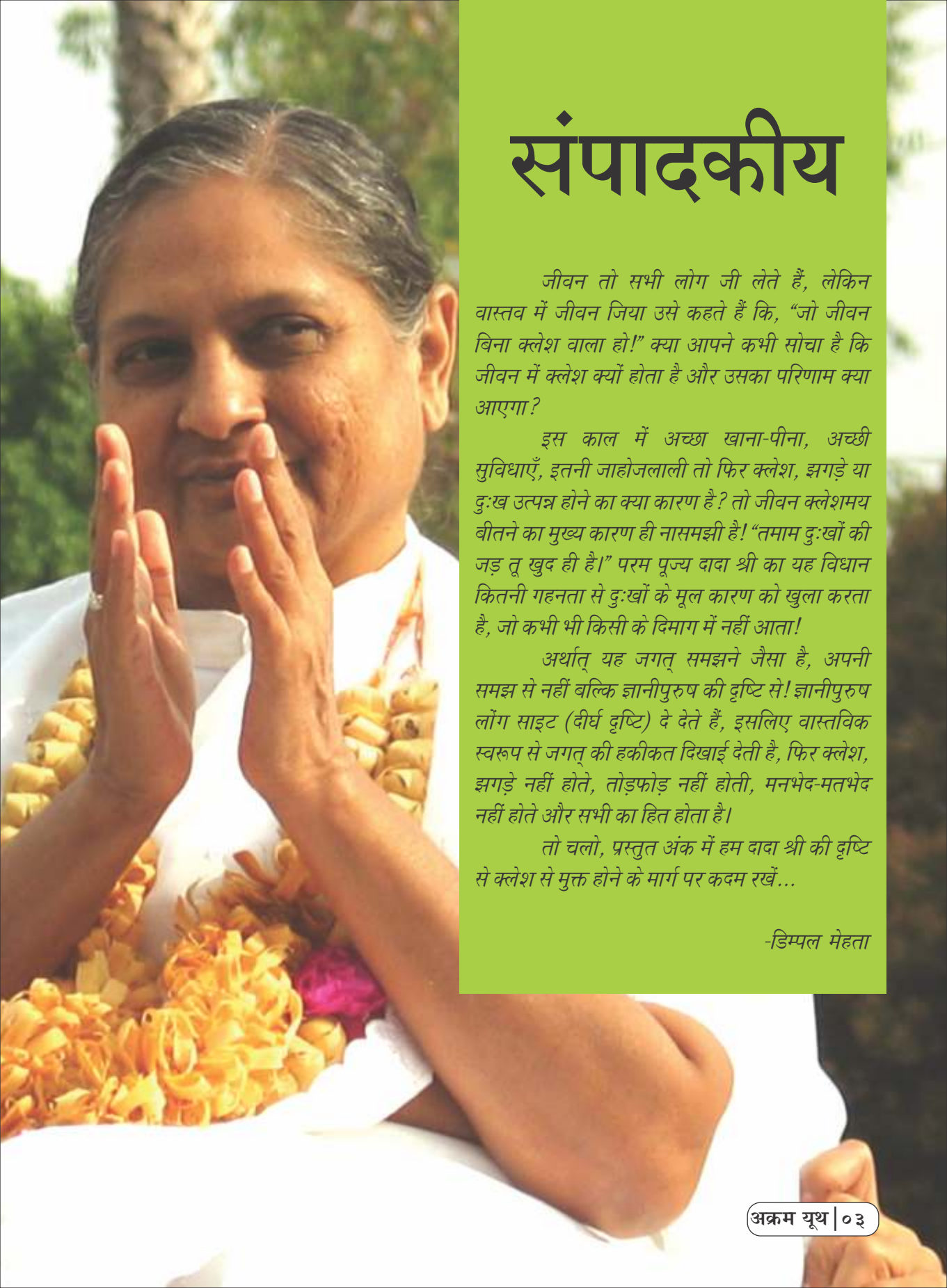

संपादकीय

जीवन तो सभी लोग जी लेते हैं, लेकिन वास्तव में जीवन जिया उसे कहते हैं कि, "जो जीवन बिना क्लेश वाला हो!" क्या आपने कभी सोचा है कि जीवन में क्लेश क्यों होता है और उसका परिणाम क्या आएगा?

इस काल में अच्छा खाना-पीना, अच्छी सुविधाएँ, इतनी जाहोजलाली तो फिर क्लेश, झगड़े या दुःख उत्पन्न होने का क्या कारण है? तो जीवन क्लेशमय बीतने का मुख्य कारण ही नासमझी है! "तमाम दुःखों की जड़ तू खुद ही है।" परम पूज्य दादा श्री का यह विधान कितनी गहनता से दुःखों के मूल कारण को खुला करता है, जो कभी भी किसी के दिमाग में नहीं आता!

अर्थात् यह जगत् समझने जैसा है, अपनी समझ से नहीं बल्कि ज्ञानीपुरुष की दृष्टि से! ज्ञानीपुरुष लोंग साइट (दीर्घ दृष्टि) दे देते हैं, इसलिए वास्तविक स्वरूप से जगत् की हकीकत दिखाई देती है, फिर क्लेश, झगड़े नहीं होते, तोड़फोड़ नहीं होती, मनभेद-मतभेद नहीं होते और सभी का हित होता है।

तो चलो, प्रस्तुत अंक में हम दादा श्री की दृष्टि से क्लेश से मुक्त होने के मार्ग पर कदम रखें...

-डिम्पल मेहता

इनमें से क्लेश किसे कहते हैं?

नीचे रोज़-बरोज़ की कुछ परिस्थितियाँ दी गई हैं और साधारण तौर पर उठने वाले दो विरोधाभासी विचार दिए हैं। दोनों में से क्लेश किसे कहेंगे, सोचो।

1 *महेश भाई का एक के बाद एक आर्थिक नुकसान होता रहता है।*

- ☐ *अ) पूरे दिन महेश भाई के मन में होता रहता है कि, "मैं तो मर गया"।*
- ☐ *ब) महेश भाई सोचते हैं, "यह तो मेरे ही कर्म का फल है। रात के बाद दिन आएगा"।*

2 *राजू खाना खाने बैठा और थाली में नापसंद खाना आया।*

- ☐ *अ) राजू को बहुत भूख लगी थी फिर भी उसने थोड़ा खा लिया और थोड़ा रहने दिया।*
- ☐ *ब) राजू ने कहा, "मैं यह नहीं खाऊँगा, ऐसा देंगे तो फिर खाना व्यर्थ ही जाएगा न!"*

3 दस साल की पिंकी अपनी मम्मी से बहुत सारे प्रश्न पूछती हैं। उन प्रश्नों के जवाब उसकी मम्मी को नहीं पता।

- [ ] अ) मम्मी उससे कहती है, "जा, पढ़ाई करने बैठ। यों ही टाइम बरबाद मत कर"।
- [ ] ब) मम्मी कहती है, "बेटा! इनके जवाब मुझे नहीं पता, किसी से पूछकर तुझे बताऊँगी"।

4 टींकू घर में सोफा पर उछल-कूद कर रहा है।

- [ ] अ) पापा उसे समझाते हैं, "बेटा! किसी को चोट नहीं लगनी चाहिए और तुझे भी नहीं लगनी चाहिए"।
- [ ] ब) पापा उसे दो थप्पड़ लगा देते हैं।

5 हमने किसी से दस हजार रुपए उधार लिए और बाद में हमारे संयोग बदल गए।

- [ ] अ) मन में विचार आते हैं कि, "पैसे वापस नहीं दूँगा तो क्या हो जाएगा?"
- [ ] ब) विचार आते हैं कि, "अगर किसी ने मुझसे पैसे लिए हों और वापस नहीं दे तो मुझे कैसा लगेगा?"

जवाब: १-ब, २-अ, ३-ब, ४-अ, ५-ब

ज्ञानी विद यूथ

पूज्य श्री *: क्रोध आने पर जो क्रोध नहीं करते उनका बहुत प्रभाव पड़ता है, प्रताप उत्पन्न होता है, उसे "शील" कहते हैं। "शील" का प्रभाव ऐसा रहता है कि उन्हें कहना नहीं पड़ता, उनकी हाज़िरी से ही काम होता रहता है। कोई बहुत गुस्से में आया हो तो इनको (शीलवान) देखते ही शांत हो जाता है। क्यों? क्योंकि प्रभाव, मैन ऑफ पर्सनैलिटी (शीलवान) कहते हैं। वैसे यह सौ प्रतिशत आगे की बात है, लेकिन कुछ अंश तक अगर कोई व्यक्ति प्रभावशाली हो, तो प्रभाव कब उत्पन्न होता है? लोग क्रोध कर रहे हों तब खुद क्रोध न करे, लोग औरों का अपमान कर रहे हों तब खुद अपमान न करे, लोग मनमानी करके काम करवाते हैं, खुद समाधान करके या समझाकर काम लेगा, उसे मनुष्यता की सारी सिद्धि उत्पन्न होती हैं। क्रोध, मान, माया, लोभ नहीं हो, उसे प्योरिटी कहते हैं। फिर उनमें प्रताप नाम का गुण उत्पन्न होता है। उनकी हाज़िरी से ही लोग गलत करना छोड़ देते हैं और सीधे चलते हैं। नेगेटिविटी छोड़ देते हैं, पॉज़िटिविटी में आ जाते हैं।*

क्रोध करते समय लोगों को ऐसा लगता है कि क्रोध नहीं करेंगे तो जीवन कैसे चलेगा? ऐसी मान्यताएँ रहती हैं। बाकी मनुष्य के अलावा अन्य कोई क्रोध नहीं करता, ये पक्षी और जानवर, सभी खा-पीकर आराम से घूमते रहते हैं। सिर्फ मनुष्यों में ही ये सब ज्यादा होता है। क्रोध है, मान है, मोह है, लोभ है।

नौकर को भी क्रोध से यों ही डाँट दिया हो न तो दिल में बैर बाँध लेता है, "मैं आपको देख लूँगा, छोड़ूँगा नहीं"। बोलो, प्याले तो टूट ही गए, चिढ़ गए वह एक नुकसान और दूसरा नुकसान उसने बैर बाँधा, तीसरा नुकसान चिढ़ने का फल हमें अधोगति मिलेगी और वह बैर बाँधेगा, छोड़ेगा नहीं। फिर दूसरे जन्म में बैर का फल आएगा। समाचार पत्र में आता है न कि, "मेम साहब का मुँह बाँधकर लूट लिया, चक्कू मारा"। बैर बाँधा था इसलिए फिर छोड़ता नहीं। अतः क्रोध के परिणामों का बहुत एनैलिसिस करना चाहिए।

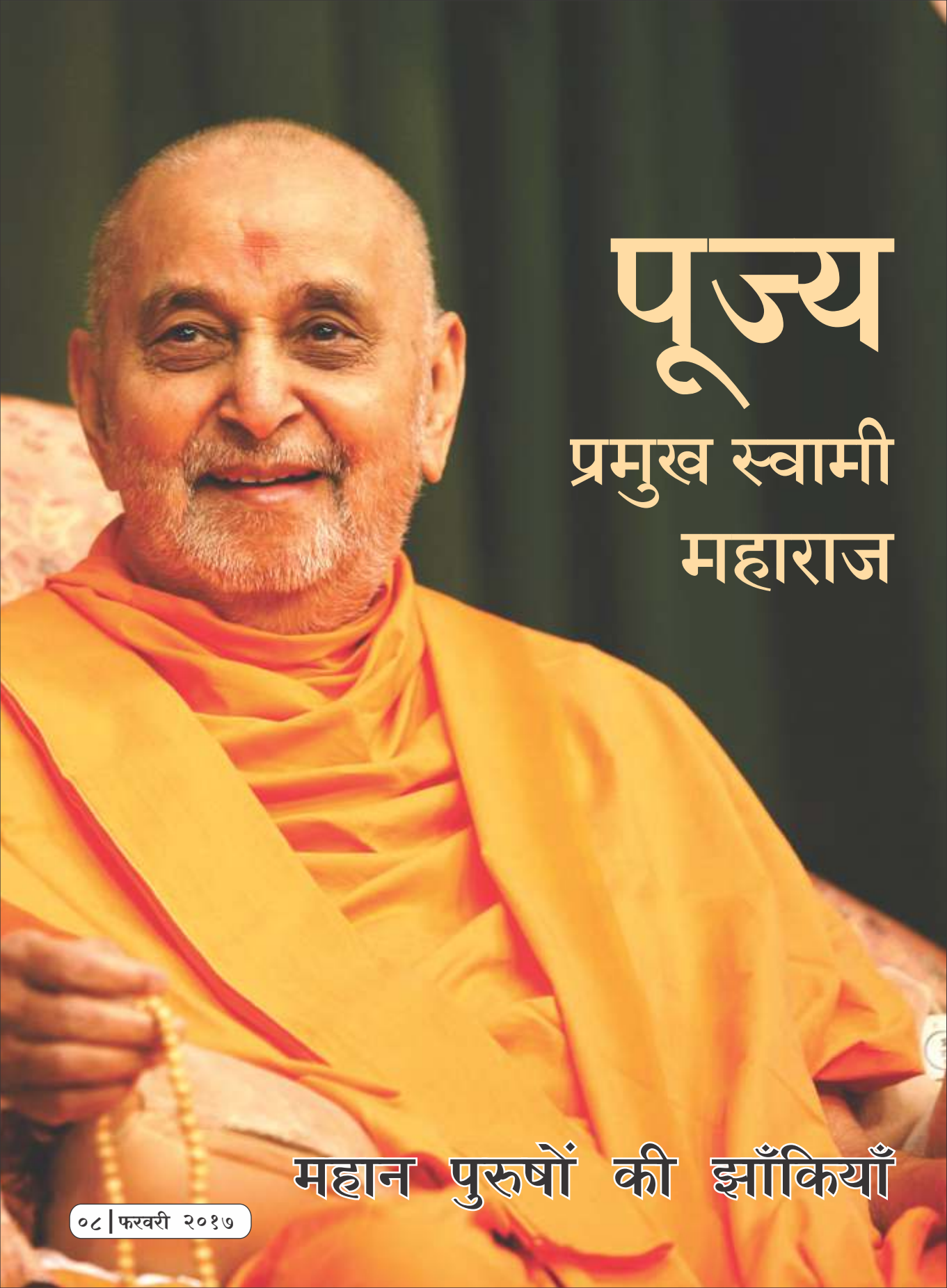

पूज्य
प्रमुख स्वामी महाराज

महान पुरुषों की झाँकियाँ

भगवान स्वामीनारायण के पाँचवें आध्यात्मिक अनुगामी (प्रमुख स्वामी महाराज) "स्वामी श्री" से पहचाने जाते हैं।

उन्होंने आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करके संयमी जीवन जिया, व्यक्तिगत संपत्ति या सुविधाओं के बिना जीवन जिया। उनका हिंदू धर्म के सारभूत जीवन, मानवता के प्रति करुणा, हर जगह समझदारी और सरलता जैसे उनके गुण, दुनिया के काफी धर्मों और राष्ट्रीय नेताओं को छू गए थे, लेकिन उसमें भी उनका भगवान के प्रति शांत, अविरत प्रेम, देश, जाति और धर्म की सभी सीमाओं से पर था।

अरे! सैकड़ो मंदिर, हज़ारों सेन्टर्स और लाखों से भी ज्यादा अनुयायी वाले आंतरराष्ट्रीय आध्यात्मिक साम्राज्य को स्थापित करने के बाद भी स्वामी जी हमेशा प्रार्थना में डूबे रहते थे। उनका जीवन इस बात का जीवंत सबूत है कि, कभी-कभार प्रातः २:३० बजे की हुई प्रार्थना काम करती है और उनका दिव्य प्रेम सफल होता है।

प्रमुख स्वामी महाराज ऐसे सच्चे जीवंत गुरु थे जिनकी विशेषता यह थी कि आध्यात्मिक प्रेरणा देना और उसे फैलाना। वे विश्वभर में सैकड़ों-हज़ारों लोगों में सुलह और शांति के चीर स्त्रोत बन गए।

कोई डिप्रेस विद्यार्थी हो या भगोड़ा बच्चा, निराश व्यापारी हो या हताश पत्नी, तलाकशुदा हो या नौकरी नहीं हो या अपने प्रियजन की मृत्यु हुई हो, लेकिन प्रमुख स्वामी जी की देखरेख, सलाह और समझदारी से लोग अपने इन सारे दुःखों से मुक्त हो जाते थे।

उनके जीवन की कई प्रेरणादायी बातें :

भगवान के प्रति निष्ठा

एकबार जब स्वामी जी ठाकुर जी के दर्शन में मग्न थे तब भगवत्चंद्र स्वामी उनके चरणस्पर्श करने के लिए झूके। स्वामी जी चौंक गए और तुरंत उन्होंने भगवत्चंद्र स्वामी को पैर छूने से रोका, और कहा, "कभी भी ठाकुर जी से पहले मेरे पैर नहीं छूने चाहिए!" फिर उन्होंने आगे कहा, "राजा से पहले, नौकर के पैर छूकर कोई उसका सम्मान करे तो कैसा लगेगा!?"

स्वामी जी के ये शब्द उनकी मानवता और ठाकुर जी के प्रति गहरी भक्ति दिखाते हैं।

मान और अपमान में

लंदन में सुवर्ण तुला का पवित्र और भव्य उत्सव मनाने के बाद, जब उनकी कार स्टेडियम से बाहर निकल रही थी और जहाँ हजारों सत्संगी स्वामी का आदरभाव कर रहे थे, तब वे अपने सत्संगिओं द्वारा लिखे हुए पत्र पढ़ने में मग्न थे। कुछ ही क्षणों में स्वामी श्री, उन्हें दिए गए सम्मान को भूल गए। दूसरे ही दिन एक विरोधाभासी घटना बनी।

एक व्यक्ति क्रोध और गुस्से से भरा हुआ, स्वामी श्री के लिए बूरे शब्द बोलता हुआ अंदर आया, लेकिन स्वामी श्री विचलित नहीं हुए। उनके चेहरे पर कोई तनाव या गुस्सा नहीं था या उनके मन में किसी भी प्रकार की दुर्भावना नहीं थी। क्रोध कम होते ही वह व्यक्ति शांत हो गया। वहाँ उपस्थित साधु को स्वामी श्री ने सूचना दी कि, "वह बिना खाए न जाए, इतना ध्यान रखना"।

स्वामी श्री उन्हें दिए गए सम्मान को भी तुरंत भूल गए और कुछ ही क्षणों में अपने अपमान को भूलकर माफी भी दे दी! उन्होंने मान और अपमान, दोनों में समभाव रखा।

अर्धरात्रि की प्रार्थना

रात के २:३० बजे थे और स्वामी श्री अपने बिस्तर पर बैठकर आँखें बंद करके, हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रहे थे, स्वामीनारायण के मंत्र का जाप कर रहे थे।

वहाँ उपस्थित साधु ने जब ऐसे करने का कारण पूछा, तब उन्होंने जवाब दिया, "हाल में भारत में अकाल पड़ा है। बिल्कुल बारीश नहीं है। मैं बारीश गिरे ऐसी प्रार्थना कर रहा हूँ ताकि पीड़ित प्राणिओं, पक्षिओं और मनुष्यों में राहत और शांति फैले।"

"आप रात में ऐसी प्रार्थनाएँ कितनी बार करते हैं?" साधु ने पूछा।

स्वामी श्री ने अनिच्छा से जवाब दिया, "मैं हमेशा रात में प्रार्थना करता हूँ। जो लोग अपने दुःख लेकर मेरे पास आते हैं, उन सभी के लिए मैं प्रार्थना करता हूँ।"

अत्यंत विनम्रता

कई साधुओं को खुद के दर्शन के लिए आए हुए देखकर स्वामी श्री ने पूछा, "आप लोग इतने खुश क्यों हैं?" साधु चूप रहे तब स्वामी श्री ने खुद ही जवाब देते हुए कहा, "अच्छा, आप लोग इसलिए खुश हैं न कि नया मंदिर बन गया है और अब आपको नए सत्संगी देखने मिलेंगे!"

स्वामी श्री के यश को ध्यान में रखकर साधुओं ने जवाब दिया, "लेकिन मंदिर तो आपने ही बनवाया है न!" तब स्वामी श्री ने जवाब दिया, "भगवान स्वामीनारायण, शास्त्री जी महाराज और योगी जी महाराज ने मंदिर बनवाया है"।

स्वामी श्री के जीवन के हर एक कार्य में भगवान और उनके गुरुओं के प्रति विनम्रता दिखाई देती थी।

उनका उपदेश

जिन्हें जीवन का कोई महत्व नहीं हैं, उनकी संपत्ति लूट जाने में देर नहीं लगती।
युवाओं को सर्व प्रथम अपने चरित्र के बारे में सोचना चाहिए। उनमें किसी भी प्रकार के व्यसन नहीं होने चाहिए। सभी महान लोग अपने जीवन में सर्व प्रथम चरित्र का गढ़न करते हैं। बिना चरित्र के आप कोई भी सामाजिक सेवा करो तो उसका फल नहीं मिलता। अरे! जब तक आप में चरित्रबल नहीं होगा तब तक आपकी कही बात का किसी पर असर नहीं होगा।

निष्फलताओं को छोड़ देना चाहिए। व्यसन, क्रोध, पूर्वग्रह, नुकसानदायक विचार और क्रियाएँ एवं ऐसी सभी चीज़ों का त्याग कर देना चाहिए। सदियों से भारत, दुनिया को चरित्र की संपत्ति देता आ रहा है। सभी अगर एक साथ मिलकर निष्फलताओं पर विजय प्राप्त करने का तय करें, तो दुनिया दोषरहित बन जाएगी। दूसरों के दोष देखना छोड़ दो और सिर्फ उनके गुण ही देखों।

साबुन से सिर्फ शरीर का मैल दूर होगा, लेकिन जो कपट और प्रपंच मन में भरे पड़े हैं, उनका क्या? सत्संग ही एक ऐसा साबुन है जो आपके मन को साफ करता है।

आपके सभी कार्य, भगवान को केन्द्र में रखकर करो। समाज की सेवा करो, लेकिन भगवान को सिर पर रखकर। भगवान को कभी मत भूलना।

चीज़ों से ज्यादा व्यक्ति की कीमत

मैं टी.वी. पर नीरू माँ का कार्यक्रम हर रोज़ देखता था। एक दिन नीरू माँ दादा के जीवन की बहुत ही हृदयस्पर्शी बात कर रहे थे। बात कुछ ऐसी थी।

दादा के समय में कोई कन्स्ट्रक्शन का प्रोजेक्ट चल रहा था। उसमें एक भाई से काम में कुछ गलती हो गई, उस वजह से १-२ लाख का नुकसान हो गया! उस जमाने में यह रकम बहुत बड़ी मानी जाती थी। गलती के कारण वे भाई इतने घबरा गए थे कि उन्होंने सत्संग में आना छोड़ दिया। दादा को बात का पता चला और उन्होंने उन भाई को कहला भेजा कि, "दादा आपको बुला रहे हैं"। दादा ने कहला भेजा था, इसलिए वे भाई डरते-डरते सत्संग में आए। जैसे ही उन्होंने दरवाज़े से प्रवेश किया कि तुरंत ही दादा ने कहा, "आइए, आइए" दादा ने इतने प्रेम से कहा कि उन भाई को अंदर बहुत हल्का हो गया। फिर तो दादा बातें करने लगे लेकिन नुकसान की बात ही नहीं निकाली। फिर जब सामने से उन भाई ने उस बारे में बात की, तब दादा ने कहा, "जो काम करता है उससे गलती हो जाती है, जो काम नहीं करता उससे गलती भी नहीं होती"।

इस बात से नीरू माँ ने बहुत अच्छी समझ दी कि, "चीज़ की कीमत नहीं है, व्यक्ति के हृदय की कीमत है।" जब मैंने यह वाक्य सुना, तब अंदर बहुत टच हो गया। उसके बाद मैंने भी तय किया कि छोटी-छोटी बातों में अब व्यक्तियों को दुःख नहीं देना है। नीरू माँ की इस बात से मेरे जीवन में बहुत परिवर्तन आ गया और छोटी बातों में होने वाले टकराव खत्म होने लगे।

-गौरव सूरी

Change Belief

क्या आप सुखी होना चाहते हैं?
क्या आप रोज़ के कलह और क्लेश से उकता गए हैं?
तो दोस्तों, सुख ढूँढने हमें कहीं और जाने की ज़रूरत नहीं है।

सुख हमारे आसपास ही है --- बस, हम से एक कदम ही दूर है।

आइए, हम समझें कि वह कौन सी चीज़ है जो हमारे जीवन में सुख ला सकती है? जो हमारे जीवन को बदल सकती है?

इसके पीछे कुदरत का कौन सा नियम है?

वह चीज़ है हमारी ही "बिलीफ"।

दुनिया में हर एक व्यक्ति की अलग-अलग बिलीफ होती है। जीवन को देखने का अलग-अलग दृष्टिकोण होता है।
हमारे जीवन की कई घटनाओं में यह बिलीफ बहुत बड़ा किरदार है।
उन घटनाओं में मनुष्य को होने वाला सुख या दुःख, अनुक्रम से उसकी "सीधी" या "उल्टी" बिलीफ पर आधारित है।
इसे समझाने के लिए, दादा श्री बहुत ही अच्छा उदाहरण देते हैं,

"मान लो कि, घर में काँच का एक प्याला टूट गया।"

परिस्थिति - १-प्याला हमसे टूट गया।
हमारी प्रतिक्रिया - "अरे,... चलो... जल्दी-जल्दी... कोई देख ले उससे पहले साफ कर लूँ।"

परिस्थिति - २ - प्याला नौकर से टूट गया।
हमारी प्रतिक्रिया - "अरे... देखकर नहीं चल सकता...? तेरे हाथ टूट गए हैं क्या? तनख्वाह में से पैसे काट लूँगा।"

परिस्थिति - ३ प्याला दामाद से टूट गया।
हमारी प्रतिक्रिया - "अरे... कोई बात नहीं... कोई बात नहीं... आपको चोट तो नहीं लगी न... यह तो बला चली गई।"

हम अगर देखें तो ऊपर की तीनों घटनाओं में बाहर तो एक समान क्रिया हो रही है। लेकिन हर बार हमारी बिलीफ के अनुसार हमें सुख या दुःख उत्पन्न होता है।

हम अगर हमारी बिलीफ ही बदल दें तो हमें दुःख नहीं होगा।

बिलीफ का दूसरा उदाहरण देते हुए दादा श्री कहते हैं कि,

"यदि बच्चा मटका फोड़ दे, तो घर में कोई भी क्लेश नहीं करता और अगर बच्चा काँच का बर्तन तोड़ दे तो?"

Get Relief

पति, पत्नि से कहेगा, "तू बच्चे को संभालती नहीं है"। तो भाई, जब मटका फूटा तब क्यों कुछ नहीं कहा?

क्योंकि उसकी डिवेल्यू थी। उसकी कीमत ही नहीं है।

कीमत नहीं हो तो हम क्लेश नहीं करते। कीमत वाले में ही क्लेश करते हैं न!

दोनों चीज़ें जो टूट गई, वे उदयकर्म के अधीन हैं। लेकिन हम मटका फूटने पर क्लेश नहीं करते, उसका क्या कारण है?"

यहाँ ऐसा है कि बाहरी संयोगों में हमारी बिलीफ में जिस चीज़ की कीमत है, उसके लिए क्लेश हो जाता है।

उसी प्रकार हम सुख का उदाहरण लेंगे। मान लो एक व्यक्ति अपने सभी दोस्तों को Pizza पार्टी दे, तो उस Pizza से सभी को एक सरीखा सुख मिलेगा या नहीं?

अब Pizza देने वाला व्यक्ति तो समान है, उसका भाव है कि सभी को आनंद मिले। सभी के लिए Pizza का संयोग एक सरीखा है। फिर भी सभी को सुख की अनुभूति अलग-अलग होती है। ऐसा क्यों? क्योंकि किसी को Pizza ज्यादा पसंद है और किसी को कम। अर्थात् सुख या दुःख देता कौन है?

- बाहर की परिस्थिति?
- कोई चीज़?
- कोई व्यक्ति?

"हमारी ही बिलीफ हमें सुख या दुःख देती है।"

इस बारे में बहुत ही सुंदर उदाहरण देते हुए दादा श्री कहते हैं,

"दिवाली के दिन सब सयाने क्यों बन जाते हैं? उनकी "बिलीफ" बदल जाती है इसलिए। आज दिवाली का दिन है, आनंद में व्यतीत करना है ऐसा तय करते हैं, इसलिए उनकी बिलीफ बदल जाती है, इसलिए आनंद में रहते हैं। "हम" मालिक हैं इसलिए सेटिंग कर सकते हैं। अगर तय किया है कि, "आज गुस्ताखी नहीं करनी है" तो तुमसे गुस्ताखी नहीं होगी।"

निष्कर्ष -

संसार में सुखी होने के लिए किसी व्यक्ति को बदलने की ज़रूरत नहीं है, किसी संयोग को बदलने की ज़रूरत नहीं है। बस, खुद को बदलने की ज़रूरत है, खुद की बिलीफ बदलने की ज़रूरत है...

भ्रष्टाचार रोको

आप जब किसी थिएटर में मूवी देखने जाएँ और टिकट नहीं मिले तब क्या करते हैं? क्या आप ऐसा कहते हैं कि, "कोई बात नहीं, हम फिर कभी आएँगे।" या आप ६० रुपए की टिकट, ब्लेक में ८० रुपए में खरीदते हो? इसका जवाब, हमारे देश में भ्रष्टाचार किस हद तक फैला है, उसे दिखाता है। भ्रष्टाचार, वह खुद को सौंपी हुई सत्ता का अपने स्वार्थ के लिए किया हुआ दुरुपयोग है (विरासत, अभ्यास, शादी, चूनाव, नियुक्ति या अन्य किसी में)।

आज के समय में विकास और लोकशाही में अवरोध करने वाला सब से बड़ा परिबल "भ्रष्टाचार" है। भ्रष्टाचार राष्ट्र के विकास पर प्रतिकूल असर डालता है। वह सरकार की कमाई कम करता है और कमाई एवं संपत्ति के बँटवारे में असमानता उत्पन्न करता है। भ्रष्टाचार से राष्ट्र के विकास पर आर्थिक, सामाजिक और राजकीय असर होता है।

भ्रष्टाचार से सार्वजनिक जीवन पर बहुत बुरा असर पड़ता है।

यह एक समस्या के बजाय विचित्र और उल्लेखनीय स्थिति ज्यादा है।

जो लोग भ्रष्टाचार में शामिल हैं, वे अन्य पर दोषारोपण करके खुद को छिपाकर रखते हैं। ऊपर से खुद पर गर्व करते हैं कि कम समय में उन्होंने कितने पैसे बना लिए!

लोगों में भी ऐसा अभिप्राय बन गया है कि काम निपटाने के लिए सिर्फ यही एक उपाय है, अगर ऐसा नहीं करेंगे तो लंबे समय के लिए काम रुका रहेगा और शायद काम न भी हो पाए।

भ्रष्टाचार की असरें

अधिकारियों के प्रति अवहेलना - भ्रष्टाचार में फँसे हुए अधिकारी के बारे में लोग नकारात्मक बातें करके उनकी अवहेलना करेंगे। लेकिन जब उन्हें खुद को उनकी ज़रूरत पड़ेगी तब वह यह सोचकर वापस उनके पास जाएँगे कि थोड़े से पैसे दे देने से हमारा काम हो जाएगा।

सत्ताधिशों के प्रति सम्मान का अभाव - राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री जैसे सत्ताधिशों का प्रजा में सम्मान कम हो जाता है।

सरकार पर श्रद्धा और विश्वास का अभाव - लोग नेताओं को उनकी श्रद्धा और विश्वास के कारण मत देते हैं। लेकिन जब लोग उन्हें भ्रष्टाचार में फँसे हुए देखते हैं तब उनका विश्वास उठ जाता है और ऐसा भी हो सकता है कि लोग दोबारा उन्हें मत न दें।

विकास का अभाव - कई नए उद्योगपति जो किसी खास प्रदेश में अपना उद्योग शुरू करना चाहते हैं, लेकिन फिर अनुकूल नहीं होने पर अपने प्लान बदल देते हैं। उस विस्तार के भ्रष्ट अधिकारी अपनी लालच के कारण जल्द मंजूरी नहीं देते और बहुत ज्यादा रिश्वत माँगते हैं। इस वजह से उस प्रदेश का आर्थिक विकास रुक जाता है।

सेवाओं में गुणयुक्तता का अभाव - भ्रष्टाचारी सिस्टम में सेवाओं की कोई गुणयुक्तता नहीं होती। अगर किसी भी सेवा में गुणयुक्तता चाहिए तो फिर उसके लिए पैसे भी चूकाने पड़ते हैं। ऐसा कई जगहों पर देखने मिलता है, जैसे म्युनिसिपालिटी, इलेक्ट्रिसिटी, रिलीफ फंड का बँटवारा वगैरह।

खराब आरोग्य और स्वच्छता - ज्यादा भ्रष्टाचार वाले देशों में स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ अधिक देखी गई हैं। पीने का शुद्ध पानी, गुणयुक्तता वाला अनाज, अच्छे रास्ते, इन सभी का अभाव होता है। स्वास्थ्य संबंधी काफी समस्याएँ होती हैं।

अकस्मात - ड्राइवर, गाड़ी नियमानुसार चलाता है या नहीं, इसकी जाँच किए बगैर ही ड्राइविंग लाइसन्स दे देने से अकस्मात और मृत्यु होती है। ऐसे भी देश हैं जहाँ किसी भी तरह के टेस्ट बगैर भ्रष्टाचार से लाइसन्स मिल जाता है।

इस प्रकार, एक बात स्पष्ट हो जाती है कि भ्रष्टाचार करने का सब से बड़ा उद्देश्य संपत्ति जमा करना है।

चलो देखें, दादा श्री क्या कहते हैं...

आज की लक्ष्मी "पापानुबंधी पुण्य" की है। अतः वह क्लेश करवाए ऐसी है। इसके बजाय भले ही (लक्ष्मी) कम आए, लेकिन घर में क्लेश तो नहीं होगा! आज जहाँ-जहाँ लक्ष्मी जाती है वहाँ क्लेश का वातावरण बन जाता है। एक भिखारी के लिए रोटी और सब्ज़ी अच्छी है, लेकिन बत्तीस पकवान काम के नहीं है, क्योंकि ऐसा खाना खाने के बाद क्लेश हो तो किस काम का! इस काल में लक्ष्मी आती है तो क्लेश लाती है। पापानुबंधी पुण्य की लक्ष्मी दुःख देकर जाती है। वर्ना तो एक ही रुपया, "ओहोहो! कितना सुख देकर जाता! पुण्यानुबंधी पुण्य तो घर में सभी को सुख-शांति देकर जाता है। घर में सभी को सिर्फ धर्म के विचार आते रहते हैं"।

अभी तो मज़ा कर लें, कल की कल देखेंगे

गीता बहन और जयेश भाई लगभग पचास साल के हैं। पत्नी गीता बहन स्वभाव से थोड़ी करकसर वाली और पति जयेश भाई थोड़े ज्यादा ही दिखावे वाले थे। अर्थात् दोनों के बीच ज्यादातर मतभेद हो जाते। उनके बेटे कृणाल ने अभी-अभी पैसे कमाना और ज़िम्मेदारी उठाना सीखा है। व्यापार में नुकसान हो जाने के कारण जयेश भाई की कमाई काफी सालों से बंद है।

"मैं तो बहुत थक गई हूँ, बाहर कितनी गर्मी है।" गीता बहन ने पसीना पोंछते हुए कहा।

"किसने कहा था इतनी धूप में वज़न उठाकर पैदल आने के लिए?" जयेश भाई चिढ़ गए।

"जब से आप घर में बैठ गए हैं तब से मेरी ज़िंदगी में तो सिर्फ काम ही लिखा है!"

"जाने दे... वैसे भी तुझ से एक रुपया भी नहीं छूटने वाला।"

"आपको कहाँ पता है कि बाहर कितनी महँगाई है। रिक्शा का भाड़ा मुझे नहीं पुसाता।"

"तेरा बेटा इतना तो कमा ही लेता है कि तू रिक्शा में बैठ सके।"

"१५,००० रुपए में महीनाभर घर तो मुझे चलाना है, आपको तो सिर्फ बातें करनी हैं।"

इतने में जयेश भाई की बहन विलास बहन घर पर आई इसलिए झगड़ा होते-होते रुक गया।

"आइए बहन, कैसी हैं आप?" विलास बहन

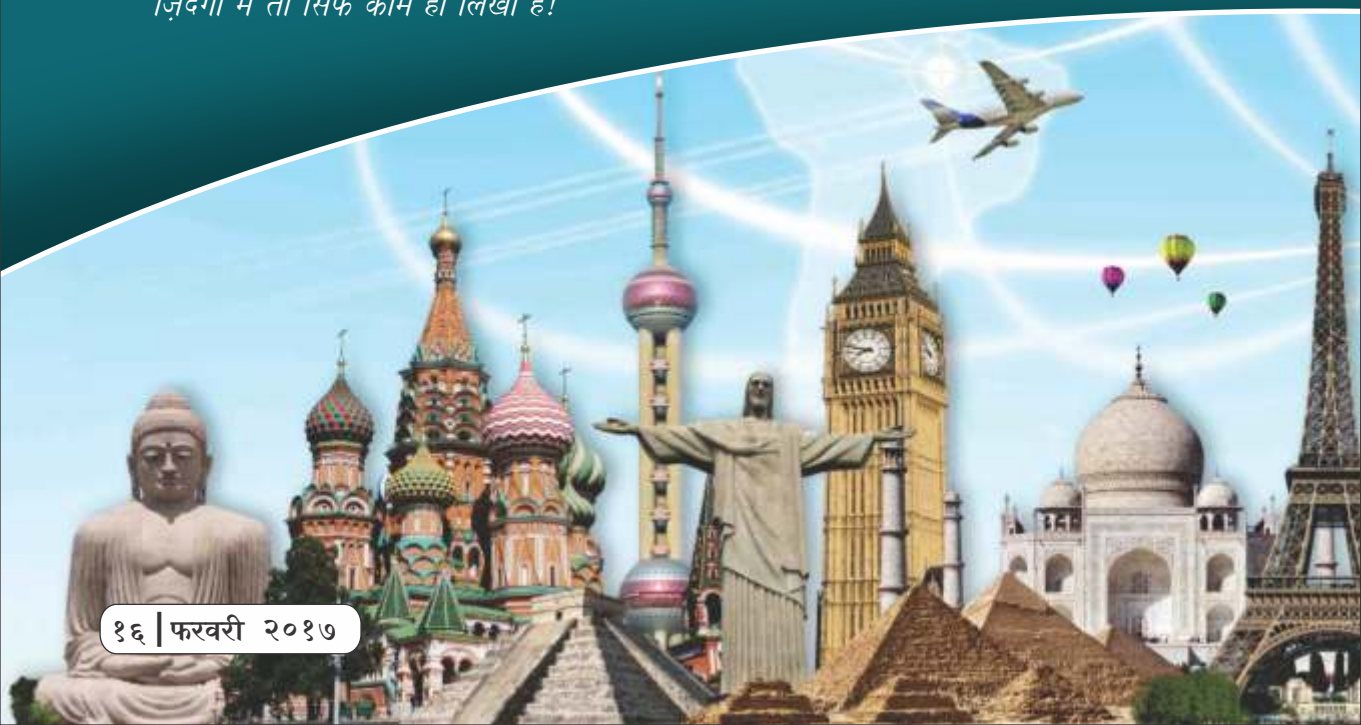

को अचानक आया हुआ देखकर गीता बहन झेंप गई।
"बिल्कुल ठीक हूँ।"
"बोलिए, इस बार क्या नए समाचार हैं?" जयेश भाई अच्छी तरह से जानते थे कि कोई खास बात हो तभी विलास बहन आती थीं।
"भाई, मेरी एक फ्रेंड जो टूर एन्ड ट्रावेल्स में काम करती है, उसका आज फोन आया था।"
"ओ.के."
"कह रही थी कि, थाइलैण्ड घूमने जाना हो तो एक बहुत अच्छा ऑफर है।"
"अच्छा, कौन सा ऑफर है?" जयेश भाई तनकर बैठ गए।
"एक व्यक्ति के सिर्फ ५०,००० रुपए लगेंगे।"
"उसमें खाना, रहना और घूमना सब आ गया।"
"वाह, यह तो अच्छा ऑफर है!" जयेश भाई ने गीता बहन की ओर देखते हुए कहा।
"ना बाबा ना, इतने पैसे कहाँ से लाएँगे?" गीता बहन ने लाचारी से कहा।
"भाभी, आप पैसे की चिंता मत कीजिए, मैं हूँ न।" विलास बहन ने तुरंत कहा।
"नहीं, नहीं, बहन, ऐसा नहीं करते।" जयेश भाई ने थोड़ी फॉर्मेलिटी से कहा।
"आप हर महीने थोड़े-थोड़े करके मुझे लौटा देना। आप तो घर के ही हैं न।"
जयेश भाई और गीता बहन के अलावा विलास बहन की किसी से नहीं बनती थी, इसलिए वे मान जाएँ तो खुद को भी ठीक रहेगा, इस वजह से उन्होंने पैसों की मदद करने का प्रस्ताव रखा।
"हम सोचकर बाद में बताएँगे।" बाहर घूमने की शौकीन गीता बहन उन्हें मना नहीं कर पाई।
विलास बहन के जाने के बाद, गीता बहन को मनाने जयेश भाई ने मीठी भाषा में कहा, "देख गीता, तेरी ज़िंदगी यों घर के कामों में बीत जाए इससे पहले मेरी इच्छा है कि, मैं तुझे एक फॉरेन ट्रीप करवाऊँ।"
"आप पैसे देने वाले हैं?" गीता बहन ने

कटाक्ष करते हुए कहा।
"हम कृणाल से पूछकर देखें तो?"
"आप ही पूछना।" अंदर से खुद की भी बहुत इच्छा थी, लेकिन कृणाल को पूछने का काम गीता बहन ने जयेश भाई के सिर पर डाल दिया।
"बेटा, अब हमारी उम्र हो चूकी है।" रात को खाने के टेबल पर जयेश भाई ने बात छेड़ी।
"तो?" रोटी और सब्ज़ी मुँह में रखते हुए आश्चर्य से कृणाल ने उनकी ओर देखा।
"विलास बहन थाइलैण्ड जाने के लिए कह रही थीं।" जयेश भाई ने सीधी बात की।
"हाँ, तो वे भले जाएँ, जाने दो।" अपने पापा को पहचानने वाले कृणाल ने हँसकर कहा।
"मैं और तेरी मम्मी भी साथ चलें, ऐसा वे कह रही थीं।"
"लेकिन अभी मेरे पास उतने पैसे नहीं है।"
"कोई बात नहीं, अभी तो विलास बहन देगी, फिर लौटा देंगे।"
"आपकी मर्ज़ी। मैं जो १५,००० देता हूँ, उसमें से सेटिंग हो रहा हो तो कर लीजिए। इससे ज्यादा मैं कुछ नहीं कर सकता।"
कृणाल के स्ट्रेट फॉरवर्ड जवाब से जयेश भाई नाराज़ तो हुए लेकिन बाहर घूमने जाने का यह मौका वे छोड़ना नहीं चाहते थे। उन्होंने कैसे भी करके गीता बहन को मनाया।
"मुझे भी पता है कि तूने छिपाकर पैसे जमा किए हैं। तो उसमें से कुछ नहीं हो सकता?"
"अरे, वह तो इमर्जन्सी के लिए जमा करती हूँ।"
"तो अब जो बचेंगे, उसे हर महीने विलास बहन को दे देंगे।"
"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा।" कई सालों की **फॉरेन** ट्रीप की इच्छा गीता बहन को आज कमज़ोर कर रही थी।
"पिछली बार सींगापूर जाने के लिए भी तूने मना किया था। बाद में तुझे ही पछतावा हुआ था।"
"हाँ, लेकिन..."
"लेकिन-बेकिन कुछ नहीं, इस बार जाना फाइनल है।"
"ठीक है, लेकिन आपको अपने फालतु खर्चे बंद करने पड़ेंगे... हं।" गीता बहन ने ऐसे करके मंजूरी दे दी।
"हाँ, बाबा, तू जैसा कहेगी, वैसा करूँगा, बस।" जयेश भाई मन ही मन खुश हो गए।
थाइलैण्ड जाकर आने के बाद आज भी हर महीने वे क्लेश करके घर चलाते हैं और ज़रूरत की चीज़ों में भी कम खर्च करके, धीरे-धीरे विलास बहन के पैसे चूका रहे हैं।
रिश्तेदार जब भी मिलते हैं तब पूछते हैं, "जयेश भाई, कैसी रही आपकी ट्रीप?"
"अरे! बहुत मज़ा आया। अच्छा हुआ देख आए, वर्ना अफसोस रह जाता।"

चलो देखें, दादा श्री इस बारे में क्या कहते हैं...

ज्ञानी की वैज्ञानिक दृष्टि से...

बिनज़रूरी चीज़ों को लाए और ज़रूरी चीज़ों पर कम खर्च करे, उसे मोह कहते हैं। जितनी नई चीज़ें देखें, उनमें चित्त फँस जाता है। चित्त फँसा यानी ऐश्वर्य टूट गया। जो तय किया है उसमें धोखा करे, ऐसा मोह नहीं होना चाहिए।

चित्तवृत्ति बिखर जाती है। अनिश्चय से और लोगों के कहे अनुसार वह करने लगता है। लोगों ने जिसमें सुख माना है उसमें खुद भी मान बैठता है। जिसकी कीमत रखी, वहाँ फिर चित्त भटकता रहता है। चित्त कब नहीं भटकता? जगत् में किसी भी चीज़ की कीमत ही नहीं लगे तब। वहाँ खुद जागृत रहकर आवश्यक और अनावश्यक तय करे, बाद में राह पर आता है। जिन बाहर की चीज़ों में मोह फैला हुआ है, उनमें से मोह कम करने के लिए चीज़ें दुःखदायी लगे, खुद को अहितकारी लगे, तो फिर उसमें से वापस मुड़ता है, फिर ऐसे करते-करते मोह का व्यापन कम होगा।

मोह पूरा करने वाली चीज़ें न मिले, और उसके प्रति अभाव रहे तो मोह गया नहीं कहलाता। वह तो चीज़ देखते ही मोही का मोह शुरू हो जाता है। यों तो खुद मानता है कि अब मुझमें मोह नहीं है, लेकिन जब कोई अपमान करके बाहर निकाल दे, तब मोह का पता चलता है। अंदर मान का मोह रहता है और कीर्ति का भी मोह रहता है, लेकिन कीर्ति के बाद अपकीर्ति आएगी। हम कीर्ति लेने जाते हैं और जब अपकीर्ति आती है तब भयंकर दुःख लगता है। अतः हमें कीर्ति-अपकीर्ति से पर होना है।

मीठी चीज़ जब मीठी लगे और कड़वी चीज़ कड़वी ही लगे, तब उसे मोह कहते हैं और जब दोनों फीके लगने लगे, अर्थात् मोहनीय परिणाम फीके पड़ गए। पूरा मोह विलय हुआ यानी हमारा काम बन गया!

समाधान हमारी उलझनों के

प्रश्न - हमारे घर में आपस में बहुत कलह-क्लेश हो जाते हैं। तो ऐसा नहीं हो, उसके लिए क्या करें?

जवाब - तुझे कलह पसंद है?

प्रश्नकर्ता : नहीं, मुझे शांति चाहिए।

जवाब : तो, जिसे शांति चाहिए उसे एडजस्ट हो जाना चाहिए। उसे टकराव टालना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : तो फिर सामने वाला उसका फायदा उठाकर और भी तंग करेगा न?

जवाब : नहीं, यह तो बुद्धि की दलील है। बाकी जगत् में कोई भी ऐसा स्वतंत्र कर्ता है ही नहीं। सभी लट्टू हैं। उनके खुद के चार्ज के अनुसार ही घूमेंगे। ऐसे ही तेरा एडजस्टेबल बरताव और शांति देखकर दूसरे लोग भी बदलेंगे और घर में शांति रहेगी। सब लोग देखकर सीखते हैं।

आप एडजस्ट होना चाहते हैं, लेकिन कई बार नहीं हो पाते और कलह हो जाए तो उसके प्रतिक्रमण करो। आप सब लोग विकली वी.सी.डी. सत्संग सेन्टर में जाइए और पूज्य श्री एवं आप्तपुत्र के प्रत्यक्ष सत्संग में भी जाइए। उससे बहुत बदलाव आएगा। सभी एक साथ मिलकर सुबह-शाम दादा की एवं सीमंधर स्वामी की आरती करो।

YOUTH IN ACTION | YOUTH EVENTS | Y-MHT | BLOG | Gallery

Youth

.dadabhagwan.org

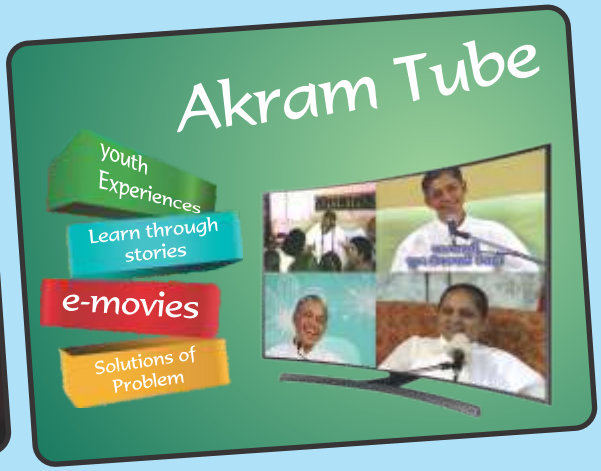

युवाओं के लिए प्रेरणात्माक दुनिया

SUMMER CAMP

८ से १२ वर्ष के बच्चे

सेन्टर	दिनांक	संपर्क
सीमंधर सिटी	२३, २४ अप्रैल ८ से १० वर्ष २५, २६ अप्रैल ११ से १२ वर्ष	०७९-३९८३०९३९
भुज	३, ४ मई	९९२४३४५५८८
गांधीधाम	१ मई	९९७८४९३५६८
सूरत	२५, २६ अप्रैल	९७२५८३२७०४
सुरेन्द्रनगर	२३, २४ अप्रैल	९४२६५७९०६४
जामनगर	२९, ३० अप्रैल	९७२३१४७३१८
मोरबी	२ मई	९७२६३८८७९२
राजकोट	२९, ३० अप्रैल	९७२३५९१६०६
वड़ौदा	२३, २४ अप्रैल	८९८०९९५२५५
महेसाणा	३० अप्रैल	९८२४९२९७८२
भरूच	२४ अप्रैल	९६६२५२०९९८
भावनगर	२९, ३० अप्रैल	९९२४३४४४२५
अंकलेश्वर	१२ मार्च	९०३३५२६०५०
वलसाड	३० अप्रैल	९९७४०९०३२१

१३ से १६ वर्ष की बहनें

सेन्टर	दिनांक	संपर्क
सीमंधर सिटी	२७, २८ अप्रैल	०७९-३९८३०९३९
गांधीधाम	२९, ३० अप्रैल	९८७९६१७१५२
सूरत	२२, २३ अप्रैल	९६०१२९१०२४
सुरेन्द्रनगर	२५, २६ अप्रैल	९७२६१०८४३४
राजकोट	१, २ मई	७६२३८४४३१६
वड़ौदा	२५, २६ अप्रैल	९६२४८५२६०२
भरूच	२५, २६ अप्रैल	९४२७१०५४४३
मुंबई	१३, १४, १५ मई	९८२०२७३१६३

Register @ kids.dadabhagwan.org
youth.dadabhagwan.org

अडालज त्रिमंदिर पर होने वाले कैम्प

४ से ७ वर्ष के बच्चे - २९ अप्रैल

१७ से २१ वर्ष की बहनें - २, ३, ४ मई

१७ से २१ वर्ष के भाइओं - १२, १३, १४ मई

संपर्क : ०७९-३९८३०९३९

१३ से २१ वर्ष के भाइओं

सेन्टर	दिनांक	संपर्क
सीमंधर सिटी	२९,३० अप्रैल	०७९-३९८३०९३९
भुज	३० अप्रैल	९९२४३४५५८८
गांधीधाम	३० अप्रैल	९८२५१६४५१५
सूरत	२९,३० अप्रैल	९८९८६८९६९७
सुरेन्द्रनगर	३० अप्रैल	९८२४३७४७५५
जामनगर	३० अप्रैल	९४२८३१५१०९
राजकोट	२०-२१-२२ मई	९८२५३१७६०७
बड़ौदा	२९,३० अप्रैल	९९२४३४३३३५
भरूच	३० अप्रैल	९९७४२९९१९३
भावनगर	३० अप्रैल	९९२४३४४४२५
मुंबई	२६-२७-२८ मई	९८६०७०८२०३
वेरावल	३० अप्रैल	९०३३०६८९६४
गोधरा	३० अप्रैल	९९७९१०९५२९
जुनागढ़	३० अप्रैल	७६०००१५४८५
वलसाड	३० अप्रैल	९९२४३४३२४५
पालनपुर	३० अप्रैल	९७२४९७३५३१
महेसाणा	३० अप्रैल	९८७९११२८९४

फरवरी २०१७
वर्ष : ४, अंक : १०
अखंड क्रमांक : ४६

अक्रम यूथ

Monthly Youth Magazine
SUBSCRIPTION
OFFER
Price : ₹ ~~125~~
You pay : ₹ 75
Offer Valid till 30th April 2017.
40 %
One Year
OFFER

Monthly Youth Magazine
SUBSCRIPTION
OFFER
Price : ₹ ~~625~~
You pay : ₹ 300
Offer Valid till 30th April 2017.
52 %
Five Year
OFFER

Akram Youth Subscription Form

Full Name : _____

Address : _____

City : _____ State : _____ Country : _____

Pincode : _____ Phone : _____

E-Mail : _____ Date of Birth : __/__/____ dd/mm/yyyy

Gujarati ☐ English ☐

1 Year	₹ ~~125~~	₹ 75	☐
5 Year	₹ ~~500~~	₹ 300	☐

D.D/M.O. should be in favour of **'Mahavideh Foundation'**, payable at Ahmedabad.

Please enclose payment or pay by credit card online at :
store.dadabhagwan.org/akram-youth

Send this form and enclosed payment to

Akram Youth
'Dada Darshan', 5, Mamta Park Society, B/h. Navgujarat college, Usmanpura, Ahmedabad - 380 014, Gujarat, India.

We would love to hear from you.
Send us your feedback and suggestions.
Email: **akramyouth@dadabhagwan.org**

अपने प्रतिभाव और सुझाव akramyouth@dadabhagwan.org पर भेजें।
मालिक - महाविदेह फाउन्डेशन की तरफ से प्रकाशितमुद्रक और संपादक - श्री डिम्पल मेहता
अंबा ऑफसेट - पार्श्वनाथ चेम्बर्स, उस्मानपुरा, अहमदाबाद विभाग १४ से प्रकाशित की गई है।